आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 4/सितंबर 2023
Received:26/06/2023; Accepted:09/07/2023; Published:24/09/2023

रामचरितमानस के पात्रों में मनोवैज्ञानिकता का समन्वय

Dr. Kamlesh Duhan
Principal - Govt.College
Nalwa-Hisar (Haryana)
Pin Code: 125037
House no.46, Sector-13,Part –II Hisar -125001

डॉ. कमलेश दूहन, **रामचरितमानस के पात्रों में मनोवैज्ञानिकता का समन्वय**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 3/अंक 4/सितंबर 2023,(386-392)

रामचरितमानस लोकशिक्षा-, लोकप्रेरणा -, लोकोपदेश, लोककोश विश्व का लोकाचार तथा व्यवहार- है। गोस्वामी तुलसीदास के इस महान ग्रन्थ में पाठकों को लोकानुभव जन्य अनेक ऐसे सदुपदेश उपलब्ध होतें हैं जिनके द्वारा समाज बुराइयों से सजग रहकर भलाई की ओर सरलता से अग्रसर हो सके और अपने जीवन तथा समाज को सुखी बना सके। गोस्वामीजी के समय में कलयुग के प्रभाव से तथा विदेशी शासकों के अनाचार के कारण लोगों में नैतिकता का एक प्रकार से लोप ही हो गया था। राजा , प्रजा , वर्ण , समाज सभी ने बौद्धिक चेतना का त्याग कर दिया था जिसके कारण समाज में अनैतिकतापूर्ण दुराचार व्याप्त हो गया था।हिन्दी साहित्य का सर्वमान्य एवं सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य "रामचरितमानस" मानव संसार के साहित्य के सर्वश्रेष्ठ ग्रंथों एवं महाकाव्यों में से एक है। विश्व के सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य ग्रंथ के साथ रामचरित मानस को ही प्रतिष्ठित करना समीचीन है | वह वेद, उपनिषद, पुराण, बाईबल, इत्यादि के मध्य भी पूरे गौरव के साथ खड़ा किया जा सकता है|

आज विश्व अनेक समस्याओं का सामना कर रहा है। 21वीं सदी में लोग पैसे और भौतिक चीजों के पीछे भाग रहे हैं। और आज के रिश्ते अर्थव्यवस्था, व्यक्तिवाद और लालच पर आधारित हैं। इस बदलाव ने सामाजिक रिश्तों की पवित्रता को तोड़ना शुरू कर दिया है। बच्चे, युवा, कह सकते हैं कि सभी आयु वर्ग दुनिया के आधुनिकीकरण से प्रभावित हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की जबरदस्त संस्कृति को हम भूलते जा रहे हैं। रामचरितमानस अवधारणाओं और सिद्धांतों को कायम रखता है और एक पारिवारिक संरचना की नींव रखता

है। रामचरितमानस ज्ञान का एक सार्वभौमिक स्रोत है। रामचरितमानस हमें दूसरों के साथ सद्भाव, प्रेम और स्नेह के साथ रहना सिखाती है। रामचरितमानस से हम कई समस्याओं का समाधान ले सकते हैं। क्योंकि हम अपनी समस्याओं को तीन तरीकों से हल कर सकते हैं, तर्क की मदद से, साक्ष्य आधारित जीवन या अनुभव की मदद से, तीसरा सात्विक ज्ञान या शास्त्र की मदद से। रामचरितमानस भारतीय संस्कृति का चित्रण करती है। रामचरितमानस हमें व्यक्ति के सभी शत्रुओं के बारे में बताता है। जैसे लालच, नैतिक पतन, निर्दयता, अभद्रता, शत्रुता, क्रूरता और बेईमानी, साथ ही व्यक्तियों के भीतर के अच्छे पहलू, उदाहरण के लिए- बहादुरी, शांत, ईमानदारी, भाईचारा, बलिदान, दया, वफादारी, नैतिकता, बड़प्पन और रोगी . मनोविज्ञान का संबंध महान महाकाव्य रामचरितमानस से भी है। मैस्लो ने मानव आवश्यकताओं की पाँच श्रेणीबद्ध अवस्थाएँ बताई हैं। पहली शारीरिक/जैविक जरूरतें हैं। दूसरी सुरक्षा की जरूरत, तीसरी प्यार / अपनेपन की जरूरत, आगे सम्मान की जरूरत और आखिरी है आत्म-बोध की जरूरत। साथ ही व्यक्तियों के भीतर के अच्छे पहलू, उदाहरण के लिए- बहादुरी, शांति, ईमानदारी, भाईचारा, त्याग, दया, निष्ठा, नैतिकता, बड़प्पन और रोगी। मनोविज्ञान का संबंध महान महाकाव्य रामचरितमानस से भी है। मैस्लो ने मानव आवश्यकताओं की पाँच श्रेणीबद्ध अवस्थाएँ बताई हैं। पहली शारीरिक/जैविक जरूरतें हैं। दूसरी सुरक्षा की जरूरत, तीसरी प्यार / अपनेपन की जरूरत, आगे सम्मान की जरूरत और आखिरी है आत्म-बोध की जरूरत। साथ ही व्यक्तियों के भीतर के अच्छे पहलू, उदाहरण के लिए- बहादुरी, शांति, ईमानदारी, भाईचारा, त्याग, दया, निष्ठा, नैतिकता, बड़प्पन और रोगी। मनोविज्ञान का संबंध महान महाकाव्य रामचरितमानस से भी है। मैस्लो ने मानव आवश्यकताओं की पाँच श्रेणीबद्ध अवस्थाएँ बताई हैं। पहली शारीरिक/जैविक जरूरतें हैं। दूसरी सुरक्षा की जरूरत, तीसरी प्यार / अपनेपन की जरूरत, आगे सम्मान की जरूरत और आखिरी है आत्म-बोध की जरूरत।

अर्थात यह एक विराट मानवतावादी महाकाव्य है, जिसका अध्ययन अब हम एक मनोवैज्ञानिक ढ़ंग से करना चाहेंगे, जो इस प्रकार है –

राम का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण: राजा दशरथ के सबसे बड़े पुत्र, अयोध्या के सिंहासन के उत्तराधिकारी, राम रामायण के नायक हैं। एक आदर्श पुत्र, वह अपनी सौतेली माँ कैकेयी की इच्छा को पूरा करने के लिए अपने भाई और पत्नी के साथ 14 साल के वनवास में चला गया, इस प्रकार खुद को एक आदर्श पुत्र के रूप में स्थापित किया। एक आदर्श पति के रूप में, उन्होंने अपनी पत्नी का अपहरण करने वाले राक्षस राजा रावण के खिलाफ युद्ध छेड़ा। एक आदर्श योद्धा के रूप में, उन्होंने सभी युद्ध संहिताओं का सम्मान करते हुए लड़ाई लड़ी। एक आदर्श राजा के रूप में, उन्होंने अपने राज्य को हर चीज़ से पहले रखा। कोई आश्चर्य नहीं, उन्हें हिंदुओं द्वारा ***'मर्यादा पुरुषोत्तम'*** के रूप में सम्मानित किया जाता है- "आदर्श व्यक्ति जो जीवन के हर क्षेत्र में सभी गुणों को कायम रखता है।"इसीलिए महाकवि तुलसीदासजी ने अपने ग्रंथ रामचरितमानस में राम का पावन चरित्र अपनी कुशल लेखनी से लिखकर देश के धर्म, दर्शन और समाज को इतनी अधिक प्रेरणा दी है कि शताब्दियों के बीत जाने पर भी मानस मानव मूल्यों की अक्षुण्ण निधि के रूप में मान्य है। अत: जीवन की समस्यामूलक वृत्तियों के समाधान और उसके व्यावहारिक प्रयोगों की स्वभाविकता के कारण तो आज यह विश्व

साहित्य का महान ग्रंथ घोषित हुआ है, और इस का अनुवाद भी आज संसार की प्राय: समस्त प्रमुख भाषाओं में होकर घर-घर में बस गया है।

एक जगह **डॉ. रामकुमार वर्मा – संत तुलसीदास ग्रंथ में कहते हैं कि 'रूस में मैंने प्रसिध्द समीक्षक तिखानोव से प्रश्न किया था कि "सियाराम मय सब जग जानी" के आस्तिक कवि तुलसीदास का रामचरितमानस ग्रंथ आपके देश में इतना लोकप्रिय क्यों है?**[1] तब उन्होंने उत्तर दिया था कि आप भले ही राम को अपना ईश्वर माने, लेकिन हमारे समक्ष तो राम के चरित्र की यह विशेषता है कि उससे हमारे वस्तुवादी जीवन की प्रत्येक समस्या का समाधान मिल जाता है। इतना बड़ा चरित्र समस्त विश्व में मिलना असंभव है। ' ऐसा गोस्वामी तुलसीदासजी का रामचरित मानस है।"

सीता का मनोवैज्ञानिक विश्लेष्ण:

राजा जनक की बेटी और राम की पत्नी, सीता के पास कभी ऐसा जीवन नहीं था जिसका उन्होंने आनंद लिया हो। उन्होंने निर्वासन में अपने पति के साथ जाने के लिए एक राजकुमारी के रूप में अपना जीवन छोड़ दिया, रावण द्वारा उनका अपहरण कर लिया गया था, उन्हें उस व्यक्ति द्वारा बचाए जाने के बाद अपनी शुद्धता साबित करनी पड़ी, जिसे वह सबसे ज्यादा प्यार करती थी, और बाद में अयोध्या के धर्मी राजा, उनके अपने पति द्वारा उन्हें निर्वासित कर दिया गया था। राम अ। बाद में उन्होंने अपनी माँ भूमिदेवी, पृथ्वी के प्रतिरूपण के निवास में अपना सांत्वना पाया।सीता को एक *अबला नारी* के रूप में चित्रित किया गया था , जो एक संकटग्रस्त युवती थी। हालाँकि, उसने कई बार मजबूत चरित्र दिखाया था, जब बाद में ऐसा न करने की सलाह देने या रावण को उसके पास न जाने देने के बावजूद राम के वनवास में जाने का फैसला किया। उसे किसी ऐसे व्यक्ति के रूप में भी चित्रित किया गया है जो ब्राह्मणों को दान देने की परंपरा का पालन करता है, जो उसके मामले में अच्छा नहीं निकला क्योंकि ब्राह्मण वेश में रावण था।राम की तरह, सीता को एक आदर्श व्यक्ति माना जाता है- एक आदर्श बेटी, एक आदर्श पत्नी, एक आदर्श माँ।मनोवैज्ञानिक ढ़ंग से अध्ययन किया जाये तो रामचरित मानस "**बड़े भाग मानुस तन पावा**"[2] के आधार पर अधिष्ठित है, मानव के रूप में ईश्वर का अवतार प्रस्तुत करने के कारण मानवता की सर्वोच्चता का एक उदगार है। वह कहीं भी संकीर्णतावादी स्थापनाओं से बध्द नहीं है। वह व्यक्ति से समाज तक प्रसरित समग्र जीवन में उदात्त आदर्शों की प्रतिष्ठा भी करता है। अत: तुलसीदास रचित रामचरित मानस को मनोबैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाये तो कुछ विशेष उल्लेखनीय बातें हमें निम्मलिखित रूप में देखने को मिलती हैं –

तुलसीदास एवं समय संवेदन में मनोवैज्ञानिकता :

तुलसीदासजी ने अपने समय की धार्मिक स्थिति की जो आलोचना की है उसमें एक तो वे सामाजिक अनुशासन को लेकर चिंतित दिखलाई देते हैं, दूसरे उस समय प्रचलित विभत्स साधनाओं से वे खिन्न रहे हैं। वैसे धर्म की अनेक भूमिकाएं होतीं हैं, जिनमें से एक सामाजिक अनुशासन की स्थापना है।

रामचरितमानस में उन्होंने इस प्रकार की धर्म साधनाओं का उल्लेख **'तामस धर्म'** के रूप में करते हुए उन्हें जन-जीवन के लिए अमंगलकारी बताया है।

तामस धर्म करहिं नर जप तप व्रत मख दान,

देव न बरषहिं धरती बए न जामहि धान॥"[3]

इस प्रकार के तामस धर्म को अस्वीकार करते हुए वहां भी उन्होंने भक्ति का विकल्प प्रस्तुत किया हैं।

अपने समय में तुलसीदासजी ने मर्यादाहीनता देखी। उसमें धार्मिक स्खलन के साथ ही राजनीतिक अव्यवस्था की चेतना भी सम्मिलित थी। रामचरितमानस के कलियुग वर्णन में धार्मिक मर्यादाएं टूट जाने का वर्णन ही मुख्य रूप से हुआ है, मानस के कलियुग वर्णन में द्विजों की आलोचना के साथ शासकों पर किया किया गया प्रहार निश्चय ही अपने समय के नरेशों के प्रति उनके मनोभावों का द्योतक है। इसलिए उन्होंने लिखा है –

द्विजा भूति बेचक भूप प्रजासन।[4]

अन्त: साक्ष्य के प्रकाश में इतना कहा जा सकता है कि इस असंतोष का कारण शासन द्वारा जनता की उपेक्षा रहा है। रामचरितमानस में तुलसीदासजी ने बार-बार अकाल पड़ने का उल्लेख भी किया है जिसके कारण लोग भूखों मर रहे थे –

कलि बारहिं बार अकाल परै,

बिनु अन्न दु:खी सब लोग मरै।[5]

इस प्रकार रामचरितमानस में लोगों की दु:खद स्थिति का वर्णन भी तुलसीदासजी का एक मनोवैज्ञानिक समय संवेदन पक्ष रहा है।

तुलसीदास एवं मानव अस्तित्व की यातना :

यहां पर तुलसीदासजी ने अस्तित्व की व्यर्थतता का अनुभव भक्ति रहित आचरण में ही नहीं, उस भाग दौड़ में भी किया है, जो सांसारिक लाभ लोभ के वशीभूत लोग करते हैं। वस्तुत:, ईश्वर विमुखता और लाभ लोभ के फेर में की जानेवाली दौड़ धूप तूलसीदास की दृष्टि में एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। ध्यान देने की बात तो यह है कि तुलसीदासजी ने जहां भक्ति रहित जीवन में अस्तित्व की व्यर्थता देखी है, वही भाग दौड़ भरे जीवन की उपलब्धि भी अनर्थकारी मानी हैं। यथा –

जानत अर्थ अनर्थ रूप-भव-कूप परत एहि लागै।[6]

इस प्रकार इन्होंने इसके साथ सांसारिक सुखों की खोज में निरर्थक हो जाने वाले आयुष्य क्रम के प्रति भी ग्लानि व्यक्त की है।

तुलसीदास की आत्मदीप्ति :

तुलसीदासजी ने रामचरितमानस में स्पष्ट शब्दों में दास्य भाव की भक्ति प्रतिपादित की है –

सेवक सेव्य भाव, बिनु भव न तरिय उरगारि।[7]

साथ-साथ रामचरित मानस में प्राकृतजन के गुणगान की भर्त्सना अन्य के बड़प्पन की अस्वीकृति ही हैं। यहीं यह कहना कि उन्होंने रामचरितमानस' की रचना 'स्वान्त: सुखाय' की हैं, अर्थात तुलसीदासजी के व्यक्तित्व की यह दीप्ति आज भी हमें विस्मित करती हैं।

मानस के जीवन मूल्यों का मनोवैज्ञानिक पक्ष :

इसके अन्तर्गत मनोवैज्ञानिकता के संदर्भ में रामराज्य को बताने का प्रयत्न किया गया है।

मनोवैज्ञानिक अध्ययन से 'रामराज्य' में स्पष्टत: तीन प्रकार हमें मिलते हैं (1) मन: प्रसाद (2) भौतिक समृध्दि और (3) वर्णाश्रम व्यवस्था।

तुलसीदासजी की दृष्टि में शासन का आदर्श भौतिक समृध्दि नहीं है।मन: प्रसाद उसका महत्वपूर्ण अंग है। अत: रामराज्य में मनुष्य ही नहीं, पशु भी बैर भाव से मुक्त हैं। सहज शत्रु, हाथी और सिंह वहां एक साथ रहते हैं –

रहहिं एक संग गज पंचानन[8]

भौतिक समृध्दि :

वस्तुत: मन संबंधी मूल्य बहुत कुछ भौतिक परिस्थितियाेंं पर निर्भर रहते हैं। भौतिक परिस्थितियों से निरपेक्ष सुखी जन मन की कल्पना नहीं की जा सकती। दरिद्रता और अज्ञान की स्थिति में मन संयमन की बात सोचना भी निरर्थक हैं।

वर्णाश्रम व्यवस्था :

तुलसीदासजी ने समाज व्यवस्था-वर्णाश्रम के प्रश् के सदैव मनोवैज्ञानिक परिणामों के परिपार्श्व में उठाया हैं जिस कारण से कलियुग संतप्त हैं, और रामराज्य तापमुक्त है – वह है कलियुग में वर्णाश्रम की अवमानना और रामराज्य में उसका परिपालन।

साथ-साथ तुलसीदासजी ने भक्ति और कर्म की बात को भी निर्देशित किया है।

गोस्वामी तुलसीदासजी ने भक्ति की महिमा का उद्धोष करने के साथ ही साथ शुभ कर्मो पर भी बल दिया है। उनकी मान्यता है कि संसार कर्म प्रधान है। यहां जो कर्म करता है, वैसा फल पाता है –

करम प्रधान बिरख करि रख्खा,

जो जस करिए सो-तस फल चाखा।[9]

आधुनिकता के संदर्भ में रामराज्य :

रामचरितमानस में उन्होंने अपने समय में शासक या शासन पर सीधे कोई प्रहार नहीं किया। लेकिन सामान्य रूप से उन्होंने शासकों को कोसा है, जिनके राज्य में प्रजा दु:खी रहती है –

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी,

सो नृप अवसि नरक अधिकारी।[10]

अर्थात यहां पर विशेष रूप से प्रजा को सुरक्षा प्रदान करने की क्षमता सम्पन्न शासन की प्रशंसा की है। अत: राम ऐसे ही समर्थ और स्वच्छ शासक है और ऐसा राज्य 'सुराज' का प्रतीक है।

रामचरितमानस में वर्णित रामराज्य के विभिन्न अंग समग्रत: मानवीय सुख की कल्पना के आयोजन में विनियुक्त हैं। रामराज्य का अर्थ उनमें से किसी एक अंग से व्यक्त नहीं हो सकता। किसी एक को रामराज्य के केन्द्र में मानकर शेष को परिधि का स्थान देना भी अनुचित होगा, क्योंकि ऐसा करने से उनकी पारस्परिकता को सही सही नहीं समझा जा सकता। इस प्रकार रामराज्य में जिस स्थिति का चित्र अंकित हुआ है वह कुल मिलाकर एक सुखी और सम्पन्न समाज की स्थिति है। लेकिन सुख सम्पन्नता का अहसास तब तक निरर्थक है, जब तक वह समष्टि के स्तर से आगे आकर व्यक्तिश: प्रसन्नता की प्रेरक नहीं बन जाती। इस प्रकार रामराज्य में लोक मंगल की स्थिति के बीच व्यक्ति के केवल कल्याण का विधान नहीं किया गया है। इतना ही नहीं, तुलसीदासजी ने रामराज्य में अल्पवय में मृत्यु के अभाव और शरीर के नीरोग रहने के साथ ही पशु पक्षियों के उन्मुक्त विचरण और निर्भीक भाव से चहकने में व्यक्तिगत स्वतंत्रता की उत्साहपूर्ण और उमंगभरी अभिव्यक्त को भी एक वाणी दी गई है –

अभय चरहिं बन करहिं अनंदा।

सीतल सुरभि, पवन वट मंदा।

गुंजत अलि लै चलि-मकरंदा॥"[11]

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि रामराज्य एक ऐसी मानवीय स्थिति का द्योतक है जिसमें समष्टि और व्यष्टि दोनों सुखी है।

सादृश्य विधान एवं मनोवैज्ञानिकता :

तुलसीदास के सादृश्य विधान की विशेषता यह नहीं है कि वह घिसा-पिटा है, बल्कि यह है कि वह सहज है। वस्तुत: रामचरितमानस के अंत के निकट रामभक्ति के लिए उनकी याचना में प्रस्तुत किये गये सादृश्य में उनका लोकानुभव झलक रहा है –

कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम,

तिमि रघुनाथ-निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम।[12]

इस प्रकार प्रकृति वर्णन में भी वर्षा का वर्णन करते समय जब वे पहाड़ों पर बूंदे गिरने के दृश्य संतों द्वारा खल-वचनों को सेटे जाने की चर्चा सादृश्य के ही सहारे हमें मिलते हैं।

अत: तुलसीदासजी ने अपने काव्य की रचना केवल विदग्धजन के लिए नहीं की है। बिना पढ़े लिखे लोगों की अप्रशिक्षित काव्य रसिकता की तृप्ति की चिंता भी उन्हें ही थी जितनी विज्ञजन की।

इस प्रकार रामचरितमानस का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करने से यह हमें ज्ञात होता है कि रामचरित मानस केवल रामकाव्य नहीं है, वह एक शिव काव्य भी है, हनुमान काव्य भी है, व्यापक संस्कृति काव्य भी है। शिव विराट भारत की एकता का प्रतीक भी है। तुलसीदास के काव्य की समय सिध्द लोकप्रियता इस बात का प्रमाण है कि उसी काव्य रचना बहुत बार आयासित होने पर भी अन्त: स्फूर्ति की विरोधी नहीं, उसकी एक पूरक रही है। निस्संदेह तुलसीदास के काव्य के लोकप्रियता का श्रेय बहुत अंशों में उसकी अन्तर्वस्तु को है। **अत: समग्रतया, तुलसीदास रचित रामचरित मानस एक सफल विश्वव्यापी महाकाव्य रहा है।**

सन्दर्भ सूची:

1.गोस्वामी तुलसीदास:डॉ.रामकुमार वर्मा पृष्ठ -34

2. रामचरितमानस :गोस्वामी तुलसीदास ,गीता प्रेस -गोरखपुर,उत्तरकाण्ड,दोहा -44

3. रामचरितमानस :गोस्वामी तुलसीदास ,गीता प्रेस -गोरखपुर,उत्तरकांड चौपाई दोहा 101

4. रामचरितमानस : गोस्वामी तुलसीदास ,गीता प्रेस -गोरखपुर,उत्तरकांड चौपाई दोहा 97 की 1 चौपाई

5. रामचरितमानस :गोस्वामी तुलसीदास ,गीता प्रेस -गोरखपुर,उत्तरकांड चौपाई दोहा 96 की 4 चौपाई

6. रामचरितमानस :गोस्वामी तुलसीदास ,गीता प्रेस -गोरखपुर,अयोध्याकांड 70 चौपाई दोहा की 2 चौपाई

7. रामचरितमानस :गोस्वामी तुलसीदास ,गीता प्रेस -गोरखपुर,उत्तरकांड चौपाई दोहा 96 की 4 चौपाई

8. रामचरितमानस :गोस्वामी तुलसीदास ,गीता प्रेस -गोरखपुर,उत्तरकांड चौपाई दोहा 22 की 1चौपाई

9. रामचरितमानस :गोस्वामी तुलसीदास ,गीता प्रेस -गोरखपुर,उत्तरकांड चौपाई दोहा 20 की 1चौपाई

10.रामचरितमानस :गोस्वामी तुलसीदास ,गीता प्रेस -गोरखपुर,अयोध्याकांड 70 चौपाई दोहा की 3 चौपाई

11.रामचरितमानस :गोस्वामी तुलसीदास ,गीता प्रेस -गोरखपुर,उत्तरकांड चौपाई दोहा 22 की 2 चौपाई

12.रामचरितमानस :गोस्वामी तुलसीदास ,गीता प्रेस -गोरखपुर,उत्तरकांड चौपाई दोहा 130 ख की 2 चौपाई

****